अब अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरन तुमारे जीव में ग्रहूं।
इन चरनों मोहे सुध भई, पेहेली निध सुंदरबाईऐं दई।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे धनी! अब वन्दना के बाद अर्जी करती हूं। हे राजजी महाराज! आपके चरण कमलों को अपने जीव के अन्दर ग्रहण करती हूं। आपके ही चरण कमलों से मैं जागृत हुई हूं। पहले तारतम ज्ञान श्री श्यामा महारानीजी (सुन्दरबाई) ने दिया।

दोऊ सरूप में जोत जो एक, सो मैं देख्या कर विवेक।
ए चरन फलें कहे इंद्रावती, तारतम जोत करूं विनती।। २ ।।

इन दोनों स्वरूपों में (राजजी-श्यामाजी में) एक ही तेज है। उसे मैंने अच्छी तरह विचारकर देखा है। इन चरणों की कृपा से ही इन्द्रावतीजी तारतम वाणी से जागृत होकर विनती करती हैं।

मेरा बुत्ता कछू न था मेरे धनी, मोपे दोऊ सरूपों दया करी अति घनी।
सेवा में न थी हाजर, न जानूं दया करी क्यों कर।। ३ ।।

मेरे अन्दर कोई ताकत नहीं थी। इन दोनों स्वरूपों (राजजी, श्यामाजी) ने अति अधिक कृपा की। मैं तो सेवा में भी हाजिर नहीं थी। पता नहीं धनी ने कृपा कैसे की?

करतब चितवनी और सेवा करे, माया गुन उलटे परहरे।
मनसा वाचा कर करमना, करे दौड़ प्यार अति घना।। ४ ।।

मन, वचन और कर्म से जो कर्तव्य, चितवन और सेवा करता है तथा जो सेवा बड़े प्यार से करता है, वह बुरी आदतों को जीत लेता है।

पर जब लग दया तुमारी न होए, तब लग काम न आवे कोए।
ए परीछा में करी निरधार, देखे सबके सब्द विचार।। ५ ।।

हे धनी ! जब तक आपकी कृपा नहीं होती, तब तक तन के अंग भी काम नहीं आते। यह मैंने सबके ज्ञान की परीक्षा कर, विचार करने के बाद निश्चय किया कि आपकी मेहर ही सबसे बड़ी है।

जीव खरा होए जुदा मन करे, कपट रत्ती न हिरदे धरे।
यों करके तुमको सेवे, वचन विचार अंदर जीव लेवे।। ६ ।।

मन को अलग करके जीव निर्मल हो जाए और हृदय में जरा भी कपट न रहे। फिर जो आपकी सेवा करेगा वही आपके वचनों को विचारकर अपने हृदय में ग्रहण करेगा।

सनकूल करे तुमारा चित, संसे भान करे जीव के हित।
पिउ चित पर चलेगा जोए, साथ में घरों सोभा लेसी सोए।। ७ ।।

हे धनी! जो आपकी वाणी को रहनी में लेकर चलेगा उसके संशय मिट जाएंगे और उसके जीव का कल्याण होगा। वह आपके चित्त को भी खुश करेगा तथा उसे परमधाम में सुन्दरसाथ में मान मिलेगा।

ए नींद उड़ाए के कहे वचन, श्री धाम धनी जीव जानी मन।
जब देख्या धनी नीके फिकर कर, तो अजू न गई नींद है अंदर।। ८ ।।

यह वचन मैंने जीव और मन से जागृत होकर धाम धनी की पहचान करके कहे हैं। फिर भी मैंने धनी का चिन्तन कर देखा तो लगा कि अभी भी मेरी नींद गई नहीं है (माया अभी बाकी है)।

Nijanand App

ए वचन कहे मैं नींदज मांहें, जब नीके देखूं धनी धाम के तांहें।
न तो क्यों कहूं धनी को एह वचन, पर कछुक तासीर है भोम इन।। ९ ।।

इन वचनों को मैंने माया के अन्दर बैठकर धाम धनी को पहचान कर कहा है। नहीं तो ऐसे वचन धनी के लिए क्यों कहती? परन्तु इस माया की भूमि की कुछ तासीर (प्रभाव) ही ऐसी है।

जब घर की तरफ देखों तुमको, तब फेर यों होए मेरे मन को।
ए धाम धनी को कहा कहे वचन, तब जीव विचार दुख पावे मन।। १० ।।

जब मैं परमधाम की तरफ ध्यान करके देखती हूं तो मेरे मन में यह विचार आता है कि मैंने धाम धनी को क्या कह दिया? उस समय जीव विचारकर बहुत दुःखी होता है।

क्या कहूं सब्द तुमें पोहोंचे नांहें, मेरी जुबां भई माया अंग मांहें।
तुम सब्दातीत भए मेरे पिउ, मेरी देह खड़ी माया ले जिउ।। ११ ।।

हे धनी! मैं क्या कहूं? मेरे शब्द आप तक पहुंचते नहीं हैं। मेरी जबान माया के तन की है। मेरा तन माया का जीव लेकर खड़ा है और आप शब्दातीत हैं।

धनी लगते वचन कहूंगी आए धाम, तब भानूंगी मेरे जीव की हाम।
ए तो वानी कही मैं साथ कारन, साथ छोड़सी माया ए देख वचन।। १२ ।।

हे धनी ! आपकी शोभा लायक शब्द तो धाम में आकर ही कहूंगी। तब मुझे शान्ति होगी। यह शब्द तो मैंने सुन्दरसाथ के लिए कहे हैं, ताकि सुन्दरसाथ इन वचनों को देखकर माया छोड़ देगा।

साथ वेगे बुलाओ कहे इंद्रावती, ए कठन माया दुख होए लागती।
ए दुख देख्या मांहें दुस्तर, कोई न पेहेचाने आप न सूझे घर।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे धनी! सुन्दरसाथ को जल्दी बुलाओ। यह माया अति कठिन दुःख देती है। यह सब कठिन दुःख मैंने माया में देखे हैं। यहां न किसी को अपनी पहचान है और न ही घर की सुध है।

ए मैं लुगा कह्या माया सनमंध, मैं देखीतां न देखूं अंध।
ए ताए कहिए जो होए बेसुध, तुम खिन खिन खबर लई कई विध।। १४ ।।

यह थोड़े से शब्द मैंने माया के प्रति कहे हैं। मैं देखकर भी अन्धी बनी हूं जो देख नहीं पाती। यह वचन तो उसे कहे जाएं जो बेसुध हो। आप तो हमारी पल-पल कई तरह से सुध ले रहे हो।

एह कहूं मैं साथ कारन, अधखिन साथ विसारो जिन।
जिन करो तुमारी पाओखिन, तो कई कल्पांत जाए मिने तिन।। १५ ।।

यह वचन मैंने सुन्दरसाथ के लिए कहे हैं। हे धनी! आप आधे क्षण के लिए भी सुन्दरसाथ को भुलाना नहीं। यह आधा क्षण मैंने संसार का कहा है। आपके चौथाई क्षण में तो यहां के कई कल्पान्त बीत जाते हैं।

मैं तो कहूं जो तुम न्यारे हो, पाओ पल साथ की जुदागी ना सहो।
मैं तो कहूं जो मेरी ओछी मत, तुम हम को कई सुख चाहत।। १६ ।।

हे धनी! यह बात तो तब कहूं जब आप मुझसे जुदा हों। आप तो सुन्दरसाथ की जुदाई एक पल भी सहन नहीं करते। यह मैंने अपनी कम अक्ल के कारण कहा है। आप तो हमें बेशुमार सुख देना चाहते हैं।

हम कारन तुम आए देह धर, तुम कई विध दया करी हम पर।
तुम धनी आए कारन हम, देखाई बाट ल्याए तारतम।। १७ ।।

हे धाम-धनी! आपने हमारे लिए ही माया का तन धारण किया है, कई तरह की मेहरबानी हमारे ऊपर की है। हमारे लिए तारतम वाणी लाए, जिससे परमधाम का रास्ता दिखाया।

Nijanand App

साथें माया मांगी सो भई अति जोर, तुम सब्द कहे कई कर कर सोर।
पर तिन समे नींद क्योंए न जाए, तब धनी सरूप भए अंतराए।। १८ ।।

हे धनी! सुन्दरसाथ ने परमधाम में जो माया मांगी थी वह यहां बड़ी जोरावर (शक्तिशाली) है। माया से निकालने के लिए आपने कई तरह से वाणी सुना-सुनाकर पुकारा। पर उस समय मेरी नींद किसी तरह नहीं टूटी और धनी अन्तर्ध्यान हो गए।

तो भी ना भई हमको खबर, तब फेर आए दूजा देह धर।
ततखिन मिले हमको आए, सागर वतनी नूर बरसाए।। १९ ।।

फिर भी हम सावचेत (सावधान) नहीं हुए तो धनी दूसरा तन धारण करके आए। तुरन्त हमें आकर मिले तथा घर के ज्ञान की बातों (नूर) की वर्षा बरसाई।

मैं साथ को कह्या सो कहिए क्यों कर, यों तो कहिए जो दूर किए होवें घर।
एता तो मैं जानूं जीव मांहें, जो ए अरज धनीसों करिए नांहें।। २० ।।

जो कुछ मैंने सुन्दरसाथ को कहा है, यह वचन तो तब कहने चाहिए जब आपने उनको घर से दूर रखा हो। यह तो मैं निश्चित रूप से जानती हूं कि यह अर्ज (प्रार्थना) मुझे आपसे नहीं करनी चाहिए।

पर साथ वास्ते दाह उपजी मन, यों जानें न कह्या हम कारन।
यों न कहूं तो समझे क्यों कोए, कई विध दया धनी की होए।। २१ ।।

सुन्दरसाथ यह न कहे कि हमारे लिए कहा नहीं, इसलिए यह तड़प मेरे मन में आई। यदि ऐसा न कहूं तो सुन्दरसाथ कैसे समझेंगे? आपकी तो दया पल-पल कई प्रकार से होती है।

ए साथ की चिन्हार को कहे वचन, ना तो धनी दया जीव जाने मन।
साथ चरने हैं सो तो वचिखिन वीर, ए भी वचन विचारे द्रढ़ धीर।। २२ ।।

हे धनी! आपकी मेहर को मेरा मन अच्छी तरह जानता है। यह वचन तो मैंने सुन्दरसाथ की जानकारी के लिए कहे हैं। सुन्दरसाथ जो चरणों में आ गए हैं, वह तो चतुर और बुद्धिमान हैं। इन वचनों का वह भी दृढ़ मन से विचार करेंगे।

पर करूं साथ पीछले की बड़ी जतन, देख वानी आवसी इन बाट वतन।
देखियो साथ दया धनी, ए कृपा की बातें हैं अति घनी।। २३ ।।

जो सुन्दरसाथ अभी माया में पड़े हैं, उनके लिए मैं यह उपाय कर रही हूं। वह इस वाणी को ही देखकर जागृत होंगे। हे सुन्दरसाथजी ! धनी की मेहर की बड़ी भारी बातें हैं जिन्हें तुम देखना।

ए दया धनी मैं जानूं सही, पर इन जुबां ना जाए कही।
जो जीव वचन विचारे प्रकास, तो अंग उपजे धाम धनी उलास।। २४ ।।

धनी की मेहर को मैं तो अच्छी तरह जानती हूं, किन्तु जबान से कही नहीं जाती। यदि जीव इन प्रकाश के वचनों पर विचारकर देखे तो धनी से मिलने की उमंग (उल्लास) उसके अन्दर आ जाएगी।

कहे इंद्रावती सुंदरबाई चरनें, सेवा पिउ की प्यार अति घने।
और कछू ना इन सेवा समान, जो दिल सनकूल करे पेहेचान।। २५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सुन्दरबाई (श्यामाजी महारानी) के चरणों की कृपा से कहती हैं कि धनी की दिल से अति प्यार से सेवा करना। यदि प्रसन्न मन से विचार करके देखो तो सेवा के समान और दूसरा कुछ नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५९० ॥

Nijanand App